अबुल कलाम आज़ाद

F.C.

छात्र-हितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग

बाल-चरितमाला सं०—४८

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

लेखक

श्री जगदीश झा 'विमल'

प्रकाशक

छात्रहितकारी पुस्तकमाला

दारागंज, प्रयाग

प्रथम संस्करण ११००] जून १९४ [मू०।)
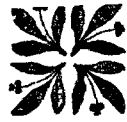
मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

किसी ने सत्य कहा है, 'राजाओं का सम्मान अपने राज्य में होता है किन्तु विद्वानों का सम्मान सर्वत्र हुआ करता है, चाहे वह किसी धर्म का अवलम्बी क्यों न हो। उसके विद्या विषयक सद् विचार निर्मल ज्ञान, लोकोपकारी कार्य और पावन चरित्र सम्मान के कारण हुआ करते हैं। माननीय मौलाना आज़ाद् इसी कोटि के महापुरुष हैं। आपका जन्म सुदूर मक्का में १८८८ ई० में हुआ था। आपका बचपन अरब में व्यतीत हुआ। आपकी प्रारम्भिक धार्मिक शिक्षा मिस्त्र की राजधानी कैरो के विश्व-विद्यालय अलअजहर में हुई थी। आपकी कुशाग्र बुद्धि, बिलक्षण प्रतिभा और प्रशंसनीय अध्ययन कार्य आपके ज्ञानोपर्जन में विशेष सहायक हुये। १४-१५ बर्ष की आयु में आपने अरबी, फारसी तथा अपने मुसलमानी धर्म और दर्शन शास्त्र की पूरी शिक्षा

प्राप्त की। आपके पूज्य पिता मौलाना खैरूल उद्दीन साहब अपने समय के बहुत बड़े विद्वान थे। उनके असाधारण व्यक्तित्व का आप पर बहुत प्रभाव पड़ा।

सन् १८५७ ई० के स्वतंत्रता-युद्ध के बाद आप के पिताजी विदेश चले गये और अपने धार्मिक तीर्थ-स्थान मिस्र, टर्की, ईराक और शाम आदि स्थानों का परिभ्रमण किया। आप फिर कुछ दिन बाद बम्बई आकर रहे लेकिन वहाँ आप स्थायी रूप से न रह कर कुछ समय के बाद कलकत्ते में आकर स्थायी रूप से रहने लगे। आप अपने समय के बहुत बड़े आलम और सूफी थे। धार्मिक प्रसिद्ध के अतिरिक्त साहित्य-संसार में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। आपने अरबी में अनेकों प्रमाणिक पुस्तकें लिखी थीं जो आज भी आदर की दृष्टि से देखी जाती हैं। आपके पूर्वज मुसलमानों में विशेष प्रतिष्ठित और सम्माननीय थे। वंशपरम्परा से अपने धार्मिक गुरु ज्ञान के कारण पीर की तरह पूजित होते आये हैं। कहा जाता है कि आपके पितामह मौलाना मुहम्मद मुनव्वरूद्दीन बादशाह अकबर के खानदान के राज-गुरू थे। मौलाना आजाद के पूज्य पिता ने वंश की

उस प्रतिष्ठा को सिर्फ अक्षुण ही नहीं रखा बल्कि व्यापक और उन्नत बनाकर विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त की। बम्बई, काठियावाड़, गुजरात, कच्छ, कोकण आदि नगरों में हजारों की संख्या में आपके शिष्य थे। बम्बई और कलकत्ते में उनके धर्म गुरु मानने वालों की संख्या बहुत अधिक थी। इतना ही नहीं लंका, जावा, मिस्त्र, शाम, ईराक आदि सुदूर विदेशों में भी आपके शिष्य फैले हुए थे। मुसलमानी धर्म पर अरबी में आपके लिखे अनेकों ग्रंथ मौजूद हैं जो मिश्र में छप कर प्रकाशित हुए हैं। सिर्फ बीस वर्ष तक अपने प्रिय पुत्र मौलाना आजाद को पूर्ण योग्य बनाकर सन् १९०८ ई० में आप स्वर्गीय हुए। यद्यपि मौलाना आजाद पिता की मृत्यु से अधिक दुखी हुए, फिर भी इसको विधि-विधान समझ कर अपने सुकार्य से तिल भर भी विचलित नहीं हुए। आपने अपने खानदान की प्रतिष्ठा को और भी व्यापक बनाया।

सिर्फ पन्द्रह वर्ष की अवस्था में आपने सार्वजनिक क्षेत्र में पदार्पण किया। उसी अवसर पर कलकत्ते से उच्च कोटि का एक मासिक पत्र निकाल कर बड़ी योग्यता पूर्वक आपने उसका सम्पादन

आरम्भ किया। युवक आजाद की लेखनी में वह चमत्कारिक गुण था कि देखने वाले दंग रह जाते थे। प्रकांड विद्वान की मँजी हुई लेखनी की करामात को फीकी करने वाली आपकी लेखनी की शक्ति साहित्य-संसार में आपकी धाक जमा बैठी। आपकी भाषा ओजस्विनी और शैली आकर्षक थी। सारे देश के मुसलमानों का ध्यान आपने शीघ्र अपनी ओर आकर्षित कर लिया। पेशावर से कन्या कुमारी तक इस्लामी जगत् में आपकी विचारधारा कुछ नया उत्साह और नये जीवन का संचार करने लगी। लोगों में धार्मिक अभिरुचि और साहित्यिक भाव भरने वाले आपके सुपाठ्य लेखों ने बड़ा काम किया।

लखनऊ के 'आलन्दो' और अमृतसर के 'वकील' नामक प्रसिद्ध पत्र में भी सुपाठ्य लेख लिखा करते थे। आपके लेखों का बड़ा आदर होता था और बड़े चाव से लोग उसे पढ़ा करते थे।

आपका खानदान पुराने ढर्रे का था, इसलिये उसी पुरानी रीति-नीति के अनुसार आपको प्रारम्भिक शिक्षा दी गई थी। पहले इस्लाम धर्म की शिक्षा दी गई। छुटपन ही में आप टर्की, शाम,

मिस्र और ईराक घूमने तथा वहाँ के उल्माओं के साथ रह कर विशेष शिक्षा प्राप्त करने और नयी दुनिया की नवीन जाग्रति देखने का सुअवसर प्राप्त कर सके थे। इसका फल यह हुआ कि आपके पुराने विचारों में परिवर्तन हो पाया। पुरानी शिक्षा और पुराने साहित्य का क्षेत्र आपको संकुचित मालूम हुआ। आपने नयी शिक्षा और नये साहित्य से नयी दुनिया की सृष्टि होते देखी। आश्चर्य पैदा करने वाले वैज्ञानिकों के वैज्ञानिक चमत्कार और यूरोप के उन्नत साहित्य की ओर आपका झुकाव हुआ। उसके अध्ययन की इच्छा हुई लेकिन वंश की पुरानी रीति समाज की परिपाटी और शिक्षा की रूढ़ियों के बन्धन के कारण आप स्वतन्त्र रूप से अपनी इच्छा की पूर्ति नहीं कर सकते थे। फिर भी अपनी इच्छा की पूर्ति का दृढ़ निश्चय करने का साहस आपने किया, आगे बढ़े! सफलता मिली, काया पलट हुई। पुराने खानदानी अन्धकार के कोने से निकल कर आपने नयी दुनिया में प्रवेश किया, अपनी प्रखर प्रतिभा के कारण थोड़े ही समय में अङ्गरेजी साहित्य का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया।

सन् १९०९ ई० से आपके राजनैतिक विचार में भी परिवर्तन होना आरम्भ हुआ। उस समय तक देश के राजनैतिक और सार्वजनिक कार्य से मुसलमान अपने को अलग रखते थे। भारत की राष्ट्रीय महासभा 'कॉंग्रेस' से उनका कोई संबन्ध नहीं था और जो थोड़े बहुत मुसलमान इस क्षेत्र में कार्य करते थे। उसे मुसलमान अपना प्रतिनिधि नहीं मानते थे। इसका कारण यह था कि सन् १८९१ ई० में सर सैयद अहमद खाँ ने कॉंग्रेस का विरोध करते हुये मुसलमानों के हृदय में यह भावनायें भर दी थीं कि हिन्दुस्तान में हिन्दुओं का बहुमत है। देश पर हिन्दुस्तानियों की हुकूमत हो जाने का अर्थ हिन्दू राज्य स्थापित करना होगा। इसलिये मुसलमानों की भलाई इसी में है कि वे इसका विरोध करते हुये सरकार के हां में हां मिलाते रहें। इसी उद्देश की पूर्ति के लिये मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। उसके १९०८ ई० के दिल्ली वाले अधिवेशन में सैयद अमीरअली का यह पैगाम सुनाया गया था कि मुसलमानों के राजनैतिक का ध्येय सरकार से नहीं, किन्तु हिन्दुओं से अधिकार प्राप्त करना होना चाहिये। उनका मुकाबिला

हिन्दुओं के साथ है, सरकार के साथ नहीं।" आपने यह अनुभव किया कि मुसलमानों का यह रुख देश की उन्नति के लिये घातक है, उसको बदलना चाहिये। इसी उद्देश की पूर्ति के लिये आपने सन् १९१२ ई० में कलकत्ते से 'अल हिलाल' नामक साप्ताहिक पत्र निकाल कर मुसलमानों की उस भ्रम पूर्ण भावना के विरुद्ध आन्दोलन करना आरम्भ किया। अपने जोरदार लेखों से यह साबित किया कि मुसलमानों की भलाई हिन्दुओं के साथ मिलकर एक हो कर रहने ही में है। उनको काँग्रेस में सम्मिलित हो कर देश की स्वतन्त्रता के लिये आन्दोलन करना चाहिये। मौलाना आजाद का यह पत्र उर्दू में होते हुये भी उच्च कोटि के अङ्गरेजी पत्रों की समता करता था। आपने उसकी सम्पादन कला का नवीन ढङ्ग से सुन्दर निखरा हुआ रूप दिखला कर उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया। आपकी प्रौढ़ भाषा और आकर्षक शैली ने साहित्य संसार में नवीनता का संचार किया। सारे देश के मुसलमानों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। मुसलमानों की विचारधारा भी पलट गई। उर्दू साहित्य के लेखक भी आपकी शैली का अनुकरण करने

लगे। इस तरह उर्दू साहित्य-संसार में आपने नवीन जीवन का संचार किया। आपकी ओजस्विनी भाषा के प्रभाव से मुस्लिम जनता में नवीन जागृति तो हुई, वे लोग बहुत बड़ी संख्या में आप के अनुयायी हुए। पर विरोधिओं का भी अभाव नहीं रहा। बहुत मुस्लिम जनता ने आपका विरोध किया, आपके कार्य में बाधा पहुँचायी, किन्तु आपने उसकी कुछ भी परवा नहीं की। वीरोचित दर्प से विरोधियों का सामना किया और अपने कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ रहे। अपनी इस दृढ़ता के कारण आपने मुस्लिम जनता पर अपनी धाक जमा ली। सन् १९१३ ई० में लखनऊ में होनेवाले मुसलिम लीग के नियमों में परिवर्तन करना पड़ा। काँग्रेस के सिद्धान्त को मानना पड़ा। देश के लिये स्वायत शासन स्वीकार करना पड़ा। इस तरह अलीगढ़ पार्टी और मुसलिम लीग वालों ने जो आपके घोर विरोधी थे आपके प्रशस्त पथ को ही अपना पथ समझा।

सन् १९१४ ई० में जब यूरोपीय महायुद्ध छिड़ा और उसने विश्वव्यापी संघर्ष उत्पन्न कर महाप्रलय का दृश्य आँखों के सामने खड़ा कर

दिया, तब लोगों के प्राण संकट में पड़ गये। उस समय आपने 'अलहिलाल' में पूरी स्वतन्त्रता के साथ अपना विचार प्रगट करना आरम्भ किया, गोया आप भी युद्ध क्षेत्र में कूद पड़े। सरकार के लिये आपका राजनैतिक विचार सहन करना असह्य हो गया। आपके पत्र की जमानत मांगी गई। विवश होकर उप पत्र को आपने बन्द कर दिया किन्तु साहस-हीन नहीं हुए। फिर दूने उत्साह से 'अलबलाग' नामक दूसरा पत्र निकालना प्रारम्भ किया। आपके प्रथम पत्र के लेखों की जाँच के लिए सरकार ने एक विशेष 'ज्यूरी' नियुक्त किया था, किन्तु पत्र की रीति-नीति और शैली ऐसी थी कि उसका उस पर कोई असर नहीं पड़ा। युद्ध की घटनाओं पर सरकार के रुख और उसकी अप्रसन्नता की कुछ परवा नहीं करके निर्भीकता पूर्वक आप उसकी टीका-टिप्पणी करते थे। आप के इस कार्य से इलाहाबाद का पायोनियर बेतरह अप्रसन्न हुआ। उसने अपने मुख्य लेखों से सरकार का ध्यान 'अल हिलाल' की ओर आकर्षित किया। हाउस आफ कामन्स में इस सम्बन्ध में प्रश्न पूछा गया। इसी का फल हुआ कि पत्र की जमानत

जप्त कर उससे दस हजार की नई जमानत माँगी गयी। पत्र बन्द हो गया।

जब आपने 'अल बलाग' निकाल कर अपनी नीति का पालन करना आरम्भ किया तो सरकार फिर चुप नहीं रही। 'भारत रक्षा कानून' का आप पर वार किया गया, आपका दिल्ली, बम्बई, युक्त-प्रान्त, मध्यप्रदेश और पंजाब आना-जाना बन्द कर दिया गया। सिर्फ बङ्गाल और बिहार के लिए उस समय आप पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया था। लेकिन यह अवस्था अधिक दिनों तक नहीं रही। सन् १९१६ ई० के अप्रैल में बङ्गाल सरकार ने भी आप को बङ्गाल छोड़ देने की आज्ञा दी, आप बङ्गाल छोड़कर राँची आकर रहने लगे। वहाँ भी चार महीने से अधिक नहीं रह पाये थे कि सरकार ने आपको वहाँ नजर बन्द कर लिया। नजर बन्दी का कारण पूछने पर सरकार की ओर से कहा गया कि बङ्गाल के विप्लव वादियों से आप का सम्बन्ध है। आप के नजरबन्द हो जाने पर भी आपका चलाया हुआ आन्दोलन उसी प्रकार चलता रहा, मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या काँग्रेस में सम्मिलित हुई। मुसलिम लीग

प्लेट-फार्म से भी वही राग अलापा जाने लगा। सन् १९१८ ई० में काँग्रेस में बहुत अधिक मुसलमान शामिल हुए।

यद्यपि नजरबन्दी के कारण आपका कहीं और जगह आना-जाना नहीं होता था, किन्तु आप का उत्साह कम नहीं हुआ था। चार वर्षों तक सरकार ने आपको नजरबन्द रखने के बाद मुक्त कर दिया। सन् १९२० ई० के जनवरी में आप नजरबन्दी से मुक्त किये गये।

देश में राजनैतिक आन्दोलन जोर पकड़ता गया। सरकार ज्यों ज्यों दमन-चक्र चलाती गई त्यों त्यों आन्दोलन सजीव होता गया। असहयोग आन्दोलन आरम्भ करने का विचार हुआ, २२ जनवरी १९२० को दिल्ली में इस पर विचार करने के लिये नेताओं का एक सम्मेलन हुआ। उस में देश के बड़े बड़े नेताओं में सिर्फ चार ही नेता उपस्थित थे, लाला लाजपत राय, महात्मा गांधी; हकीम अजमल खाँ और आप। इस तरह असहयोग के जन्म दाताओं में आप भी प्रधान हैं। बड़ी सफलता पूर्वक आपने इस शान्ति मय आंदोलन का चलाना आरम्भ किया।

सन् १९२१ ई० में युवराज के भारत आगमन पर स्वागत की तैयारी होने लगी। आप लोगों ने उसे असफल बनाने का यत्न किया। सरकार ने सब से पहले आप के बङ्गाल में इस के लिये दमन-चक्र चलाना आरम्भ किया।

क्रिमिनल ला एमेंडमेन्ट एक्ट के अनुसार स्वयं-सेवक दल और कांग्रेस कमीटियाँ गैर कानूनी घोषित की गईं। असहयोगियों से जेल भरी जाने लगी। फिर भी आप निर्भीकता पूर्वक अपने कार्य पर डटे रहे। १० दिसम्बर को देशबन्धु दास के साथ आप भी इसी अपराध में गिरफ़्तार कर लिये गये। विचार होने पर सरकार ने आप को एक वर्ष की सजा दी। आप का जेल-जीवन देश के आन्दोलन के लिये शिथिलता उत्पन्न करने वाला हुआ। सन् १९२३ ई० की जनवरी में जब आप अपनी सजा पूरी कर जेल से निकले तो देश कांग्रेसवादियों को दो भागों में बँटा पाया—परिवर्त्तनवादी, अपरिवर्तनवादी। आपकी दृष्टि में कांग्रेस की यह फूट देश के लिये मंगल जनक नहीं जँची, इसलिये आप ने प्राणपन से दोनों दलों को मिला देने के लिये प्रयत्न किया और उस में आप को

सफलता भी मिली।

इस कार्य के लिये निरन्तर कई महीनों तक आपको यत्न करना पड़ा। सन् १९२३ ई० के मार्च को इलाहाबाद में महा समिति की बैठक में आप का समझौता स्वीकार किया गया। फिर नागपुर की बैठक के बाद कांग्रेस का विशेष अधिवेशन करने का विचार स्थिर हुआ। उस विशेष अधिवेशन के सभापति के लिये सर्वसम्मति से आपही का नाम लिया गया। सितम्बर १९२३ में दिल्ली में आप ही के सभापतित्व में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बड़ी सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। आप का अभि-भाषण समयानुकूल और देश की जनता के लिये बड़ा ही लाभप्रद था। उस समय कमाल पाशा ने यूनान के विरुद्ध टर्की की विजय के खिलाफत का खातमा करने में सफलता प्राप्त की थी। इसलिये आपने अपने भाषण में टर्की की जीत पर उसको बधाई देते हुये खिलाफत आन्दोलन पर राष्ट्रीय दृष्टि से विचार करते हुये बताया कि मुस्लिम देशों पर उस का कैसा प्रभाव पड़ा। आप ने कहा—गत चार वर्षों से मैंने खिलाफत की माँगों को मुसलमानों की अपेक्षा हिन्दुस्तानी की दृष्टि से

देखा है। आप के इस कथन से हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानियों पर आप का अगाध प्रेम प्रकट होता है। आपने यह भी कहा "महात्मा गाँधी ने खिलाफत के प्रश्न को पुष्ठ कर के देश की बहुत भारी सेवा की।" महात्मा गाँधी की दूर-दर्शिता, राजनीतिज्ञता और राष्ट्र सेवा का सगर्व वर्णन करते हुये असहयोग की सार्वभौम सचाई बताया था और कहा था कि कोई भी विजित जाति विजेता के साथ सहयोग करके अपने राजनैतिक अधिकारों को प्राप्त नहीं कर सकती है। अपने इस कथन की पुष्टि में आप ने सुन्दर ऐतिहासिक और दार्शनिक विवेचन किया था। हिन्दू मुस्लिम द्वेष की आग भी सुलग चुकी थी। उसका विशेष विवेचन करते हुए आपने कहा था—"सारी बातों का विचार करने के बाद मैं निस्संकोच भाव से यह घोषणा करता हूं, कि देश को न तो हिन्दू-संगठन की आवश्यकता है और न मुस्लिम संगठन की ही। आज केवल एक संगठन की आवश्यकता है और वह एक मात्र भारतीय राष्ट्रीय महासभा (काँग्रेस) का सङ्गठन है।" आपने अपने सुन्दर भाषण में मसजिदों के सामने बाजे-गाजे के प्रश्न, पीपलकी

टहनियों और जुलुसों के झगड़े को छोड़ कर राष्ट्रीय सङ्गठन को दृढ़ बनाने के लिये जोर दिया और परिवर्तन वादियों से भी आपस का भेद छोड़ कर एक होकर कार्य करने की अपील की। आप के इस सुन्दर भाषण का जनता पर खूब प्रभाव पड़ा और बहुत दिनों की फैली हुई कांग्रेस की फूट दूर होगई। दोनों दलों ने अपने विचार, विश्वास एवं तरीके से कांग्रेस का कार्य करना शुरु कर दिया। देश के दुर्भाग्य से हिन्दू-मुसलमानो में फिर भी कुछ लोग ऐसे निकले जो मजहबी झगड़े का बीज वपन करने की चेष्टा करने लगे। शुद्धि और सङ्गठन, तंजीब और तबलीग के नाम पर वे आपस में लड़ने लगे। इस लड़ाई को देखकर आपको बहुत हार्दिक दुख हुआ; वे देश के लिये इसको घातक समझते थे। आप का रात-दिन यही यत्न रहा कि जिससे आपुसी लड़ाई बन्द हो। आप राष्ट्रीय कार्य उसी प्रकार दृढ़ रह कर करते रहे। और आपका सतत् यही यत्न रहा जिससे आपसी झगड़े शन्त हों।

मुसलमानों को आप ने मसजिदों में जा जा कर समझाया कि मसजिद के सामने बाजा बजाने

से मसजिद की पवित्रता और आप लोगों के धार्मिक कार्य में किसी प्रकार की हानि नहीं हो सकती। आपका धर्म अपने राष्ट्र का विरोधी कभी नहीं हुआ। राष्ट्र और धर्म दोनों में घनिष्ट सम्बन्ध है। आप के इस प्रयत्न से यद्यपि यह झगड़ा मिटा नहीं, परन्तु इस सम्बन्ध में आपका प्रयत्न प्रशंसनीय रहा।

कुछ विशेष कारणों से १०२४ ई० में आप अपना प्रेस और पुस्तकालय दिल्ली में लाकर अपना कार्य करने लगे और वहीं स्थायी रूप से रहने लगे। लेकिन अधिक समय तक आप वहां नहीं रहे। पुनः कलकत्ते लौट आये और वहीं तब से अब तक स्थायी रूप से रह कर कार्य कर रहे हैं।

आरम्भ से आज तक हिन्दू-मुस्लिम समझौता के लिये नेहरू रिपोर्ट या और उसी प्रकार के जितने भी कार्य हो रहे हैं आपने सच्चे हृदय से उनका स्वागत करते हुए उस कार्य में सहयोग दिया और उनकी सफलता के लिये प्रयत्न किया। देश की एकता और स्वतन्त्रता के लिये आप सतत प्रयत्नवान रहते आये हैं। आप की यही इच्छा

रहती है कि सम्पूर्ण भारतवासी एक सूत्र में बंध कर देश की सतत् स्वतन्त्रता का अह्वान करें।

सन् १९२० ई० से आप कांग्रेस के सदस्य हैं और तभी से बड़ी लगन और तत्परता के साथ काँग्रेस-कार्य में जुटे रहते हैं। सन् १९३३ ई० में जब काँग्रेस को सरकार ने गैर कानूनी संस्था घोषित की तोभी आप उसी रूप से उसके कार्य में लगे रहे। इस कारण और १९३२ ई० में काँग्रेस के विशेष अधिवेशन के सभापति होने के कारण आप गिरफ़्तार कर लिये गये। यह आप की तीसरी बार की गिरफ़्तारी थी। इस तरह की कठिनाइयों को सहर्ष सरपर उठाते हुए अपने उद्देश्य की पूर्त्ती में बराबर लगे रहे। जेल की यातना, नजरबन्दी का कष्ट, देश सेवा के सामने आप को हलका प्रतीत होता था। आप काँग्रेस के उन महारथियों में हैं जिन की सलाह-सम्मति और सहयोग से काँग्रेस की कार्य पद्धति तैयार की जाती है। देश की पुकार पर जब जब आवश्यकता हुई है आप किसी से पीछे नहीं रहे हैं। आप के सुललित ओजस्वी और हृदयग्राही भाषण का जनता के हृदय पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। आप प्रभावशाली वक्ता

विद्वान, सुलेखक, गम्भीर विचारक और नीति-निपुण महापुरुष हैं। काँग्रेस की विषय निर्वाचिनी समिति और महाअधिवेशन में आप के भाषण को लोग बड़े ध्यान से सुनते हैं। आप के भाषण में नपे तुले शब्द और काम की बातें रहा करती हैं।

सत्याग्रह स्थगित हो जाने के बाद सन् १९३७-३८ के कौन्सिल चुनाव में जब काँग्रेस ने भाग लिया और अपना प्रतिनिधि कौंसिल में भेज कर कार्य करने का निश्चय किया तो उसकी देख-रेख के लिये पार्लियामेन्टरी समिति की स्थापना की। उसके तीन सदस्यों में एक सदस्य आप ही नियुक्त किये गये। इस कार्य में आपने बड़ी दिलचस्पी के साथ इस को सफल बनाने के लिये परिश्रम किया। राजेन्द्र बाबू के अस्वस्थ होजाने के कारण आप ही पर इसका अधिक भार पड़ा, और आपने बड़ी योग्यता पूर्वक संकट आने पर भी इस कार्य का सम्पादन किया। मध्य प्रान्त में पैदा हुए मंत्रि-मंडल के झगड़े को निपटाने, उड़ीसा में स्थानापन्न गवर्नर की नियुक्ति पर वैधानिक संकट की स्थिति का सामना करने, सिंध में मंत्रि मंडल की उलझनों को सुलझाने, बिहार में टैनेंसी बिल को लेकर प्रांतीय

सरकार तथा जमींदारों में उत्पन्न हुए मतभेदों को मिटाने और आसाम में काँग्रेसी मंत्रिमंडल की स्थापना कराने आदि में आपने अपना भाग उक्त समिति के सदस्य के नाते अत्यन्त सुन्दर ढङ्ग से अदा किया है। आप के व्यक्तित्व का प्रभाव इसी कारण विशेष महत्वदायक समझा जाने लगा। साम्प्रदायिक (मजहबी) झगड़ों में—खास कर मुसलमानी मामलों में—आप ही का विचार मान्य समझा जाता है। महात्मा गाँधी जी भी आपके विचार को प्रमाणिक समझते हैं। आप के नीति-पूर्ण कार्य से वे आपको देश का सच्चा नेता समझते हैं और आदर की दृष्टि से देखते हैं।

महात्मा जी जब मि० जिन्ना से साम्प्रदायिक समझौते के सम्बन्ध में मिलकर बातें करना चाहते थे तो उनकी इच्छा थी कि अपने साथ आपको लेजाँय, किन्तु जिन्ना साहब उनके साथ मौलाना आजाद का आना अच्छा नहीं समझते थे, इसका यही कारण था कि वे इनको काँग्रेसी विचार का समझ कर इनसे नाराज़ थे। महात्मा जी को जब जिन्ना का विचार मालूम हो गया तो वे आपको साथ नहीं ले गये। आपको किसी की मुँह-देखी बात

करने का अभ्यास नहीं है, जो उचित होता है वही कहते और करते भी हैं, चाहे उससे किसी के स्वार्थ में भले ही धक्का पहुँचे।

सन् १९३८ ई० के अक्टूबर के तीसरे सप्ताह में काँग्रेस की महा-समिति की बैठक सुभाष बोस के सभापतित्व में होने वाली थी। किन्तु किसी अनिवार्य कारण से वे उपस्थित न हो सके; इसलिये समिति की बैठक आप ही के सभापतित्व में हुई।

इन बैठकों में सरदार पटेल के अतिरिक्त और कोई नेता ऐसे नहीं थे जिनके कार्य करने की क्षमता और व्यक्तित्व आपकी समता कर सके। मौलाना आजाद अपने धार्मिक शास्त्र के जैसे प्रकाण्ड पंडित हैं, राजनीति के भी आप वैसे ही धुरन्धर ज्ञाता हैं। आप किसी बात को लेकर हठ करने वाले नहीं हैं। यदि अपने कार्य या विचार में पीछे आपको अपनी भूल मालूम होती है तो आप उसे सहर्ष स्वीकार कर अपने किये पर पश्चाताप करते हैं। आपकी नीति महात्मा जी की नीति से मिलती जुलती है, इसीलिए कुछ लोग आपको गाँधीवादी नेता कहते हैं। लेकिन यह अक्षरशः सत्य है कि आप किसी के अन्ध भक्त नहीं हैं। आप कार्य-विषय

पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके अपना विचार प्रकट करते हैं, किसी छोटे से कार्य में भी जल्दी नहीं करते, यही कारण है कि आपका कार्य अत्यन्त ठोस हुआ करता है। मौलाना आज़ाद के चेहरे पर गम्भीरता, बुजुर्गी और पाण्डित्य पूर्ण नीति की छाया है।

इस्लामिक फिलासफी और धर्मशास्त्र पर आप प्रमाण माने जाते हैं। सच में आप उस विषय के बेजोड़ विद्वान हैं। अपने पूज्य पिता की तरह आपने भी इन विषयों पर उत्तमोत्तम ग्रन्थ लिखे हैं जिनकी प्रसिद्धि मुस्लिम संसार में है। आपके विशेष आदर और सम्मान इन ग्रन्थों के कारण दूसरे दूसरे देश के मुसलमानों में होता है। आपकी योग्यता और विद्वता की धाक मिश्र, टर्की, ईरान और अरब तक के मुसलमानों में जमी हुई है। आप अपने स्वजातियों में वीर की तरह पूजे और माने जाते हैं। मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या के धर्मगुरू माने जाते हैं। संसार के अन्यान्य देशों में भी आपके हजारों शिष्य हैं। कलकत्ते में ईद के अवसर पर आप ही मुसलमानों को नमाज़ पढ़ाते हैं। उस समय आप मुसलमानों के बीच उसी तरह सम्मा-

नित होते हैं जैसे मनुष्यों के बीच देवता। मिस्टर जिन्ना के लीगी विचार वाले मुसलमान आपको काँग्रेस की नीति का पालक समझ कर आपसे विरोध भाव रखते हैं। वह विरोधी दल आपके साथ बगावत करने को तैयार हुए। उन लोगों ने चाहा कि आपका यह धार्मिक अधिकार अपहरण कर लिया जाय, किन्तु अपने प्रयत्न में उनको सफलता नहीं मिली। आप पूर्ववत अपने कार्य पर अड़े रहे। इधर पुनः इस आन्दोलन ने जोर पकड़ा, लीगी विचार के मुसलमान आपको नमाज (ईद के अवसर पर) नहीं पढ़ाने देना चाहते हैं, यद्यपि उदार विचार के मुसलमान इस आन्दोलन का विरोध कर रहे हैं, लीगी विचार वाले आपको इमाम रहने देना नहीं चाहते हैं और अविराम इसके प्रयत्न में लगे हैं। लेकिन आपको इस आन्दोलन की कुछ भी परवा नहीं है, आप उसी प्रकार दृढ़ता पूर्वक राष्ट्रीय कार्य में लगे हुए हैं। आपके विचार बहुत उदार, उन्नत और प्रतिगामी होते हैं। समाचार पत्रों में आपके लिखे लेखों से आपके स्वतंत्र व्यक्ति-त्व का परिचय उन कोगों को भी मिल जाता है जिनको आपसे मिलकर बातें करने का अवसर प्राप्त

नहीं हुआ है। सच तो यह है कि जो स्वार्थ का भूखा है, अपने सम्मान का इच्छुक है और अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये कार्य करता है उसको इस प्रकार के विरोध की चिन्ता है और जो देश दुनिया के लिए जीना चाहता है और उसी पर अपने को न्योछावर कर चुका है उसको इस प्रकार के विरोधियों की चिन्ता स्वप्न में भी नहीं हुआ करती। अंगद के पाँव की तरह वह अपने पथ पर अटल रहा करता है।

मौलाना आज़ाद ने मुसलमानी धर्मग्रन्थ कुरान शरीफ का जैसा सुन्दर अनुवाद किया है उस जोड़ का अनुवाद आज तक नहीं हुआ है। आपका अनुवाद सरल, सुन्दर और प्रमाणिक है। उसमें आपने जिस उदार और विशाल दृष्टि से विचार किया है उसका परिचय इस एक ही उदाहरण से मिलता है। आपने लिखा है—"कुरान ने न केवल उन सब धर्म के संस्थापकों को सच्चा माना है, जिनके मानने वाले उस समय उनके सामने मौजूद थे, बल्कि साफ शब्दों में कह दिया है कि मुझसे पहले जितने भी रसूल और प्रवर्तक हुए हैं, मैं उनको सच मानता हूं और उनमें से किसी

एक को न मानने को भी, ईश्वरीय सत्य को न मानने से इनकार समझता हूं। उसने किसी धर्म वाले से यह नहीं चाहा कि वह अपना धर्म छोड़ दे। बल्कि जब कभी चाहा तो यही कि सब अपने अपने धर्म की असली शिक्षा पर चलें। सब धर्मों की असली शिक्षा एक ही है। न उसने कोई नया सिद्धान्त पेश किया और न कोई नयी कार्य पद्धति ही चलाई। उसने सदा उन्हीं बातों पर जोर दिया। संसार के सब धर्मों की सबसे ज्यादा जानी सूझी बातें हैं, अर्थात एक जगदीश्वर की उपासना और सदाचार का जीवन। उसने जब कभी लोगों को अपनी ओर बुलाया है तो यही कहा है, कि अपने अपने धर्मों की वास्तविक शिक्षा को फिर से ताजा कर लो। तुम्हारा ऐसा कर लेना ही मुझे कबूल कर लेना है।" इस प्रकार के स्वतंत्र विचार आप सदा ही प्रकट करते आये हैं। काबुल में मुरतिद (मजहबी बदलने वाले) लोगों को जब पत्थर मार मार कर जान से मार डाला गया था, तब उसके विरोध में आपने अपनी आवाज बुलन्द की थी और उसको इस्लाम धर्म तथा इतिहास दोनों के विरुद्ध कहा था। भारत में होने वाली

धार्मिक हत्याओं के भी आप विरोधी रहे हैं। महात्मा मुन्शी राम, कराँची के नाथूराम प्रकृति के हत्यारे की आपने घोर निन्दा की थी और जब कभी ऐसी ऐसी घटनायें घटती हैं आपको अपार दुख होता है। आप स्पष्ट कहा करते हैं कि ऐसा आदमी गाजी नहीं कातिल है। यदि कोई दूसरा धर्मावलम्बी मुहम्मद साहब को बुरा भला कहता है तो सहन करना चाहिये। ऐसे आदमी को दण्ड देने का मुसलमानों को कोई अधिकार नहीं है और न उसका फर्ज ही है। आपका अनुवाद कुरान शरीफ की व्याख्या इस दृष्टि से महत्वपूर्ण और अपूर्व है। आपने ऐसे मुसलमानों के इस प्रकार के कार्यों का घोर विरोध किया है और कर रहे हैं जो धर्मान्ध होकर राष्ट्र के कार्यों का विरोध ही नहीं, बाधक होकर खड़े हैं। यद्यपि आप अपने इस कार्य में पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाये हैं फिर भी सतत उसमें प्रयत्नशील रहते हैं। लगातार प्रयत्न कभी निष्फल होने वाला नहीं है। आप के बताये हुये पथ पर चलने वाले मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या है जो देश के कल्याण का लक्षण है। जब तक भारत की विभिन्न जातियों में राष्ट्रीय एकता

नहीं होगी तब तक देश का कल्याण नहीं होगा। आप का यह विचार शीघ्र ही सफल होने की कोई यह निश्चय नहीं कर सका है, लेकिन ऐसा होने की सम्भावना है। जिस प्रकार उपजाऊ भूमि में जो बीज वपन किया जाता है उसके अँकुरित हो कर फूलने-फलने की अधिक संभावना रहती है, उसी प्रकार आपने अपने सुन्दर नीतिपूर्ण आदर्श का जो बीज बोया है वह अँकुरित हो चुका है, अब उसका वह समय भी अधिक दूर नहीं है कि फूल-फलों से युक्त हो। आपका नाम भारत के उन मुसलमानों में पहले लिया जायगा जिन्होंने भारत के मुसलमानों में राष्ट्रीयता और सहन-शीलता का भाव पैदा किया है। आप लोगों का कथन है कि हम पहले भारतीय हैं पीछे मुसलमान, अर्थात् सब से पहला कार्य हम लोगों का देश के उत्थान के लिये है। जैसे एक परिवार के लोग साथ मिल कर अर्जन करके आपस में उस अर्जित धन का उपभोग करते हैं, उसी प्रकार हम सब को मिल कर सब से पहले राष्ट्र को स्वतंत्र और उन्नत बनाना चाहिये, उसके बाद उसके लाभ का उप-भोग आपस में मिल जुल कर करना चाहिए।

काँग्रेस के वे बड़े बड़े नेता जिन्होंने अपना जीवन काँग्रेस पर न्यौछावर करके उसको सफल बनाने को अपने जीवन का कार्य समझा, मौलाना आजाद उसी कोटि के नेता है। आपने जब से काँग्रेस को अपनाया है तभी से आज तक एक ही लगन से आप उसको सफल बनाने में लगे हुये हैं। इस बीच में कितने ऐसे नेता भी काँग्रेस में आये और कुछ दिन उस क्षेत्र में कार्य करके अलग हो गये, किन्तु आप एक भाव से दृढ़ता पूर्वक उसमें लगे हुये हैं। मौलाना आजाद साहब का विचार क्षणभंगुर या अस्थाई नहीं होता है, जो कुछ करते हैं खूब सोच विचार कर करते हैं और उस पर दृढ़ रहते हैं। महात्मा गाँधी इसी कारण आपके कार्य के प्रशंसक बने हुये हैं। राष्ट्र के लिये जो कुछ उनको करना होता है आपकी सम्मति लेकर करते हैं।

सन् १९३९ ई० में त्रिपुरी काँग्रेस-महासम्मेलन के अवसर पर जब उसके मनोनीत सभापति सुभाष बोस बीमार हो गये, उस समय उन्होंने अपने स्थान पर आप ही को बैठा कर सभापति का कार्य करने का अनुरोध किया। आपने बड़ी

खूबी के साथ उस कार्य भार को संभाला। आप की महान योग्यता और प्रकाराड पाण्डित्य को सब समझते और मानते हैं। कई बार आपका नाम अखिल भारतवर्षीय काँग्रेस के सभापति के लिये लिया गया, किन्तु आपने बराबर यह कहकर अस्वीकार किया कि अभी तक मेरे लिये समय नहीं आया है, समय आने पर मैं सहर्ष स्वीकार कर लूँगा। इस बार जब देश का साम्प्रदायिक वातावरण विशेष दूषित मालूम हुआ, लीग वाले काँग्रेस को हिन्दू संस्था कहकर बदनाम करने लगे, राष्ट्रीय कार्यों के मार्ग में रोड़े अटकाये जाने लगे, तब एक ऐसे योग्य सभापति की आवश्यकता काँग्रेस को हुई जो विरोधियों का मुँह बन्द कर राष्ट्र के लिए सर्वस्व अर्पण कर सके। महात्मा गाँधी की दृष्टि में मौलाना आजाद के अतिरिक्त कोई दूसरा योग्य नेता इस समय के लिये नहीं देख पड़ा। अपने कथनानुसार मौलाना साहब भी अपने अनुकूल समय देखकर सभापति पद के लिये खड़े हुये। दूसरे दलवालों ने एम० एन० राय को भी खड़ा किया, किन्तु बहुत अधिक बहुमत से आप सभापति चुने गये। सन १९४०

ई० का यह काँग्रेस महासम्मेलन विहार के रामगढ़ में हुआ। मौलाना आजाद साहब ने देखा कि भारत के राष्ट्रीय क्षेत्र में अनेक प्रकार की दल-बन्दी के कारण कुछ अधिक कठिनाइयाँ उपस्थित हो गई हैं, बड़ी योग्यता पूर्वक सभापति का प्रशंसनीय कार्य किया। आपके वृद्ध शरीर में युवकों से भी अधिक दृढ़ता और कार्य करने की क्षमता देख-देख कर दर्शक दङ्ग रह गये। जिस समय राँची रोड से मजहरपुरी (रामगढ़ में जहाँ काँग्रेस सम्मेलन होने वाला था उसका नाम रक्खा गया था मजहरपुरी) की ओर मोराकृति सुन्दर मोटर पर मौलाना आज़ाद को बिठाकर जुलूस निकाला गया था, उस समय नर-समुद्र के बीच आपका देव-दुर्लभ स्वागत होते देख लोगों को अपार आनन्द होता था। आपके ऊपर पुष्पों की वर्षा हो रही थी और आप अपना दोनों हाथ जोड़ मुस्कराते हुए जनता का अभिवादन कर रहे थे। उस समय का दृश्य बड़ा ही मनोरम था। लाखों मनुष्यों के बीच वह नर-शार्दूल देवताओं के बीच इन्द्र के समान सुशोभित हो रहा था, यह उसकी स्वार्थ रहित देश-सेवा का पुरस्कार था। इस वर्ष

की कांग्रेस की कई विशेषताओं में एक विशेषता यह भी थी कि आप जैसे योग्य राष्ट्रपति के सभापतित्व में खुले अधिवेशन के समय, भगवान वरुण प्रसन्न हो कर ठीक सम्मेलन के समय मूसलधार जल-वृष्टि करने लगे, यद्यपि उनके इस कार्य से एक तरह से रङ्ग में भङ्ग वाली कहावत चरितार्थ हो गयी। सभाभङ्ग हो गयी फिर भी राष्ट्रपति वृद्ध होते हुए भी कष्ट सहते हुए सभा स्थान में तब तक अड़े रहे जब तक सभाभंग नहीं हो गयी। आपका भाषण तो निर्विघ्नता पूर्वक पहले ही दिन हो गया था। जिस समय देश विकट परिस्थिति में पहुँच कर इस प्रकार संघर्ष हो रहा है उस समय राष्ट्रपति के पद से दिया हुआ आप का भाषण आप ही के अनुकूल हुआ। काँग्रेस में वामपन्थी और दक्षिणपन्थी दो दल हो जाने के कारण आपुसी फूट पैदा हो गयी है। ये लोग आपस में अपने २ विचार के अनुसार राष्ट्र का कार्य करना चाहते हैं। उधर लीग वाले अपना साम्राज्य अलग स्थापित करना चाहते हैं। हिन्दू सभा अपनी दुनिया अलग बसाना चाहती है, सरकार लड़ाई में सहायता देने के लिये अलग अपील कर

चुकी है। इस प्रकार की बहुरङ्गी कार्य पद्धति से दूषित वातावरण में सबको संभाल कर देश के कार्य भार को अपने कन्धे पर उठाना सब के लिये सुलभ नहीं है। मौलाना आजाद साहब ने देश की इस संकट-पूर्ण परिस्थिति के सामने भी अपना कन्धा उठाकर इस गुरुतर भार को अपने कन्धे पर लिया। आपके सुन्दर ओजस्वी भाषण की प्रशंसा जितनी भी की जाय, थोड़ी है। आपने देशवासियों को राष्ट्रपति के मंच से जो सन्देश दिया है वह देश के लिये सर्वदा मङ्गलप्रद है। आप के सुन्दर भाषण की कुछ पक्तियाँ ज्यों की त्यों नीचे दी जाती हैं, इसी से इनकी महानता तथा उदारता का पता लगता है।

"सन् १९२३ ई० में आपने मुझे इस राष्ट्रीय महासभा का सभापति चुना था। अब १६ साल के बाद दोबारा आपने मुझे वह इज्जत बक्सी है। कौमों की जिन्दगी में या उसके संघर्ष के इतिहास में १७ साल कोई बड़ा समय नहीं है। लेकिन दुनिया में इतनी तेजी के साथ तब्दीलियाँ हो रही हैं कि अब समय के पुराने अन्दाज काम नहीं दे सकते। इन १७ साल के अन्दर एक दूसरे के बाद बहुत-सी

मंजिलें हमारे सामने आती रहीं। हमारी यात्रा लम्बी थी और बहुत सी मञ्जिलों से होकर हमारा गुजरना जरूरी था। हम हर मञ्जिल में ठहरे, किन्तु रुके नहीं। हमने हर मुकाम को देखा-भाला, मगर हमारा दिल कहीं भी अटका नहीं। तरह तरह के उतार चढ़ाव सामने आये किन्तु हर हालत में हमारी दृष्टि आगे ही की ओर रही। दुनिया को हमारे इरादे के विषय में सन्देह भले ही रहे हों किन्तु हमें अपने फैसलों के उचित होने के कभी सन्देह नहीं हुआ। हमारा मार्ग कण्टकों से भरा था। हमारे सामने पग पग पर बड़ी-बड़ी रुकावटें थीं। हम जितनी तेजी से चलना चाहते थे नहीं चल सके। लेकिन हमने अपनी शक्ति भर आगे बढ़ने में कभी कसर नहीं की। अगर हम सन् १९२३ ई० और सन् १९४० ई० के बीच की यात्रा पर नजर डालें तो हमें अपने पीछे बहुत दूर, एक धुँधला सा निशान दिखाई देता है। सन २३ में हम अपनी मंजिले मकसूद यानी अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहते थे। मगर वह मंजिल हमसे इतनी दूर थी कि उस तक पहुँचने के मार्ग का निशान भी हमारी आँखों से ओझल था। लेकिन

आज नजर उठाइये और सामने की तरफ देखिये, न केवल मार्ग का निशान ही साफ साफ दिखलाई दे रहा है बल्कि खुद मंजिल भी दूर नहीं है। हाँ, यह जाहिर है कि ज्यों ज्यों मञ्जिल निकट आती जाती है हमारे प्रयत्नों की प्रतीक्षा भी बढ़ती जाती है। आज नित्य नई घटनाओं ने जहाँ हमें पिछले निशानों से दूर और आखिरी मंजिल (लक्ष्य) के नज़दीक लाकर खड़ा कर दिया है वहाँ इन्हीं घटनाओं ने तरह तरह की नई उलझने और मुश्किलें भी पैदा कर दी हैं, और बहुत ही नाजुक परिस्थिति, एक अत्यन्त संकट पूर्ण मार्ग से हमारा कौमी काफला गुजर रहा है। इस तरह की नाजुक परिस्थितियों की सब से बड़ी विशेषता यह होती है कि उनमें आगे के लिये एक दूसरे के विरुद्ध संभावनायें दिखाई देती हैं। बहुत संभव है कि एक ठीक कदम हमें अपने लक्ष्य के बिल्कुल पास पहुँचा दे और यह भी संभव है कि एक गलत कदम हमें नई नई मुश्किलों में फँसा दे। ऐसे नाजुक समय में आपने मुझे सभापति चुन कर मुझ पर जिस भरोसे का सबूत दिया है वह निस्सन्देह बड़े से बड़ा भरोसा है जो देश-सेवा के मार्ग में आप

अपने किसी भी साथी पर कर सकते थे। यह बहुत बड़ी इज़्जत है, इसलिये यह बहुत बड़ी जिम्मे-दारी है। मैं इस इज्जत के लिये शुक्र गुजार हूं और जिम्मेदारी के लिये आपके सहयोग का सहारा चाहता हूं। मुझे विश्वास है कि जिस उत्साह के साथ आपने मुझ पर इस भरोसे को प्रगट किया है उसी के साथ आप सब का सहयोग भी मुझे मिलता रहेगा।

यह हिन्दुस्तान की अल्पसंख्यक जातियों का मसाला था। लेकिन क्या हिन्दुस्तान में मुसलमानों की हैसियत एक ऐसी अल्प संख्यक जाति की हैसियत है जो अपने भविष्य को भय और आ-शंका की नज़र से देख सकती है और वे तमाम शंकायें अपने सामने ला सकती है जो कुदरती तौर पर एक अल्प संख्यक जाति के मस्तिष्क को बेचैन कर देती है ?

मुझे नहीं मालूम आप लोगों में कितने आदमी ऐसे हैं जिनकी नजर से मेरे वे लेख गुजर चुके हैं जो आज से २८ साल पहले मैं "अल हिलाल" के पृष्ठों पर लिखता रहा हूं। यदि कुछ लोग ऐसे भी मौजूद है तो मैं उनसे प्रार्थना करता हूं कि वे

अपनी याद ताजा कर लें। मैंने उस ज़माने में भी अपना यह विश्वास प्रगट किया था और उसी तरह आज भी करना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की राजनैतिक समस्याओं में कोई भी बात इतनी ज्यादा गलत नहीं है जितनी यह कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों की हैसियत राजनैतिक दृष्टि से एक अल्प जाति की हैसियत है, और इसलिये उन्हें आजाद और जम्हूरी यानी जनतंत्रात्मक हिन्दुस्तान में अपने और हितों की ओर से सशंक रहने की जरूरत है। इस एक बुनियादी गलती ने बेशुमार गलतफ़हमियों के पैदा होने का दरवाजा खोल दिया। गलत बुनियादों पर दीवारें चुनी जाने लगीं। नतीजा यह हुआ कि एक तरफ तो खुद मुसलमानों को अपनी असली हैसियत के बारे में संदेह होने लगा और दूसरी तरफ दुनिया एक ऐसी गलतफहमी में पड़ गई जिसके बाद वह हिन्दुस्तान और उसकी वर्तमान परिस्थिति का ठीक ठीक नहीं देख सकती।

यदि समय होता तो मैं आपको विचार के साथ बताता कि इस मामले की यह गलत और बनावटी शक्ल पिछले साठ बरस के अन्दर क्यों

न ली गई और किन हाथों ने उसे ढाला ? वास्तव में यह भी उसी फूट डालने वाली पालिसी की उपज है जिसका नक्शा इण्डियन नेशनल काँग्रेस की तहरीक के शुरू होने के बाद हिन्दुस्तान के सरकारी दिमागों में बनना शुरू हो गया था और जिसका उद्देश यह था कि मुसलमानों को इस नई राजनैतिक जागृति के विरुद्ध इस्तमाल करने के लिये तैयार किया जाय। इस नक्शे में दो बातें खास तौर पर उभारी गई थीं। एक यह कि हिन्दुस्तान में दो अलग अलग कौमे आबाद हैं। एक हिन्दू कौम है और दूसरी मुसलमान कौम है। इसलिये हिन्दुस्तान और मुत्तहिदा कौमियत याने संयुक्त राष्ट्रीयता के नाम पर कोई मतालबा यानी माँग पेश नहीं कर सकते। दूसरी यह कि मुसलमानों की तादाद हिन्दुओं के मुकाबले में बहुत कम है, इसलिये यहाँ जन तन्त्रात्मक संस्था कायम होने का नतीजा यह होगा कि बहु संख्यक हिन्दुओं की हुकूमत कायम हो जायगी और मुसलमानों का अस्तित्व खतरे में पड़ जायगा। मैं इस वक्त और ज्यादा रफ्तार में नहीं जाऊँगा। मैं आपको सिर्फ इतनी बात याद दिलाऊँगा। यदि

इस मामले का शुरू का इतिहास मालूम करना चाहते हैं तो आपको हिन्दुस्तान के एक पिछले वाइसराय लार्ड डफरिन और पश्चिमोत्तर प्रान्त के जिसे अब संयुक्तप्रान्त के एक लिफ़्टनेण्ट गवर्नर सर-आकलेण्ड कालविज के जमाने की तरफ लौटना चाहिए।

ब्रिटिश साम्राज्य की हिन्दुस्तान की सर जमीन में समय समय पर जो बीज बोये उनमें से एक बीज यह भी था। इसमें तुरन्त फूल-पत्ते फूट आये और यद्यपि पचास साल बीत चुके फिर भी अभी तक इसके जड़ों की नमी खुश्क नहीं हुई है।

राजनैतिक भाषा में जब कभी 'अल्प संख्यक जाति' 'अकल्लियत' या 'माइनारिटी' ये शब्द बोले जाते हैं तो इनका यह मतलब नहीं होता कि मामूली गणित के हिसाब के कायदे से मनुष्यों की हर ऐसी संख्या जो दूसरी संख्या से कम हो जरूरी तौर पर 'माइनारिटी' होती है और उसे अपनी रक्षा की ओर से आशंका या घबराहट होनी चाहिए। बल्कि इन शब्दों से मतलब एक ऐसी कमजोर जमायत का है जो तादाद और सलाहियत यानी संख्या और क्षमता दोनों की दृष्टि से अपने

को इस योग्य नहीं पाती कि एक बड़े और ताकत-वर गिरोह के साथ रहकर अपनी रक्षा के लिए खुद अपने ऊपर भरोसा कर सके। इसके लिये केवल यही काफी नहीं है कि एक गिरोह संख्या में दूसरे गिरोह से कम हो, बल्कि यह भी जरूरी है कि उसकी अपनी संख्या खुद भी कम हो और इतनी कम हो कि उसे अपनी रक्षा की आशा नहीं की जा सके। संख्या यानी नम्बरों के साथ साथ इसमें उस गिरोह की अपनी विशेषता ही काम करती है। फर्ज कीजिए एक मुल्क में दो गिरोह है, एक की संख्या एक करोड़ है और दूसरे की दो करोड़। अब एक करोड़ दो करोड़ का आधा है और दो करोड़ से कम है मगर राजनैतिक दृष्टि से यह आवश्यक नहीं है कि केवल इसी अनुपात से फर्क की बिना पर उसे एक माइनारिटी फर्ज करके उसके अस्तित्व को कमजोर स्वीकार करलें। इस तरह की माइनारिटी या अल्प संख्यक जाति होने के लिए संख्या के अनुपात के फर्क के साथ साथ दूसरी बातों का होना भी जरूरी है।

अब जरा गौर कीजिए कि इस दृष्टि से हिन्दुस्तान में मुसलमानों की असली हैसियत क्या है?

आपको देर तक गौर करने की जरूरत नहीं होगी। आप केवल एक निगाह में देख लेंगे कि आपके सामने एक बहुत बड़ा गिरोह इतनी बड़ी और फैली हुई संख्या के साथ सर उठाये खड़ा है कि उसके विषय में माइनारिटी या अल्पसंख्या की कमजोरियों का गुमान करना भी अपनी निगाह को धोखा देना है।

उसकी संख्या मिलाकर इस देश में आठ करोड़ से नौ करोड़ के अन्दर है। यह संख्या देश की दूसरी जमायतों की तरह पेशों के लिहाज से और पैतृक दृष्टि से टुकड़ों या जातों में बँटी हुई नहीं है। इस्लामी जिन्दगी की समता के वसूल ने और इस्लाम के बेरादराना यकजेहनी के मजबूत रिश्ते ने इस संख्या को पेशों के तफरकों की कमजोरियों से बहुत दरजे तक बचा रखा है। यह सच है कि यह संख्या मुल्क की पूरी आबादी की एक चौथाई से ज्यादा नहीं है, लेकिन सवाल संख्या के अनुपात का नहीं है बल्कि खुद संख्या उसकी विशेषता है। क्या मनुष्यों की इतनी बड़ी संख्या के लिए इस तरह की आशङ्काओं की कोई नीति जायज हो सकती है कि वह एक स्वाधीन और

जन तन्त्रात्मक हिन्दुस्तान में अपने हकों या हितों की खुद रक्षा नहीं कर सकेगी ?

या संख्या मुल्क के किसी एक हिस्से में सिमटी हुई नहीं है बल्कि एक खास बटवारे के साथ मुल्क को मुख्तलिफ हिस्सों में फैली हुई है। हिन्दुस्तान के ११ प्रान्तों में चार ऐसे हैं जिनमें मुसलमानों की संख्या ज्यादा है जहाँ उनकी 'अक्सरीयन' यानी मेजारिटी है और जहाँ दूसरी मजहबी जमायतें अल्प संख्या यानी माइनारिटी में हैं। यदि इसमें ब्रिटिश बलूचिस्तान को भी जोड़ दिया जावे तो चार की जगह मुस्लिम 'अक्सरीयत' के पाँच प्रान्त हो जायेंगे। यदि हम अभी इस बात के लिए मजबूर हैं कि मजहबी तफरके की बिना पर ही 'मेजारिटी' और माइनारिटी की कल्पना करते रहें तो भी इस कल्पना में मुसलमानों की जगह केवल एक माइनारिटी को दिखाई नहीं देती। वह अगर सात सूबों में माइनारिटी की हैसियत रखते हैं तो पाँच सूबों में उन्हें मेजारिटी की जगह हासिल है। ऐसी स्थिति में कोई कारण नहीं कि उन्हें एक माइनारिटी ग्रूप होने का ख्याल बेचैन करे।

हिन्दुस्तान का भावी शासन विधान और बातों में चाहे जैसा हो मगर उसकी एक बात हम सब को मालूम है। वह यह कि वह विधान पूरे अर्थों में एक आल इण्डिया फेडरेशन का जन तन्त्रात्मक विधान होगा जिनके तमाम अलग अलग हलके अपने अलग अलग मामलों में खुद मुख्तार होंगे और फेडरेल केन्द्र के सुपुर्द केवल वही मामले रहेंगे जिसका सम्बन्ध सारे देश के व्यापक और संयुक्त प्रश्नों से होगा। मिसाल के लिये दूसरे देशों के साथ सम्बन्ध, देश रक्षा, जहाजी चुंगी वगैरह। ऐसी हालत में क्या यह मुमकिन है कि कोई भी समझदार आदमी जो किसी जनतन्त्रात्मक विधान के पूरी तरह अमल आने और चलने का नकशा थोड़ी देर के लिए भी अपने सामने ला सकता हो। उन आ-शंकाओं के लिये तैयार होगा जिन्हें मेजारिटी और माइनारिटी के इस फरेब से भरे हुये इस सवाल ने पैदा करने की कोशिश की है? मैं एक क्षण के लिये यह भी विश्वास नहीं कर सकता कि हिन्दुस्तान के भावी चित्र में इन आशंकाओं के लिये कोई जगह निकल सकती है। वास्तव में

ये सब आशङ्कायें इसलिये पैदा हो रही हैं कि एक ब्रिटिश नीतिज्ञ के मशहूर शब्दों में जो, उसने आयरलैंड के विषय में कहे थे, हम अभी तक दरिया के किनारे खड़े हैं और यद्यपि तैरना जानते हैं मगर दरिया में नहीं उतरते। इन आशङ्काओं का केवल एक ही इलाज है वह यह कि हमें दरिया में निशङ्क और निर्भय होकर कूद जाना चाहिए। ज्योंही हमने ऐसा किया हम मालूम कर लेंगे कि हमारी तमाम आशङ्कायें बेबुनियाद और निस्सार थीं।

५

लगभग तीस बरस हुए मैंने हिन्दुस्तानी मुसलमान की हैसियत से इस मसले पर गौर करने के लिए पहली बार कोशिश की थी। यह वह जमाना था जब कि मुसलमानों की बहुत बड़ी तादाद राजनैतिक संघर्ष के मैदान से बिलकुल तटस्थ थी और आम तौर पर वही विचार चारों ओर छाये हुये थे जिनकी वजह से कुछ मुसलमानों ने सन् १८८८ ई० में काँग्रेस से अलहिदा रहने और उसकी मुखालफत करने का इरादा कर लिया था। उस समय की आम हवा मेरे सोच-

विचार की राह नहीं रोक सकी। मैं जल्दी एक आखिरी नतीजे तक पहुँच गया, जिसने मेरे सामने विश्वास और व्यवहार दोनों का मार्ग खोल दिया। मैंने देखा कि हिन्दुस्तान अपनी सारी परिस्थिति के साथ हमारे सामने मौजूद है और अपने भविष्य की ओर बढ़ रहा है। हम भी इसी किश्ती में सवार हैं और उसकी चाल से बे परवाह नहीं रह सकते। इसलिये जरूरी है कि हम अपने व्यवहार यानी तर्जे अमल का एक साफ और अन्तिम फैसला कर लें। यह फैसला हम क्योंकर कर सकते हैं? केवल इस तरह कि हम मामले की दूसरी सतह पर ही न रहें बल्कि उसकी बुनियादों तक पहुँचने की कोशिश करें और फिर देखें कि हम अपने आपको किस हालत में पाते हैं। मैंने ऐसा ही किया और देखा कि इस सारे मामले का फैसला केवल एक सवाल के जवाब पर निर्भर है। वह सवाल यह कि हम हिन्दुस्तानी मुसलमान हिन्दुस्तान के स्वाधीन भविष्य को आशंका और अविश्वास की दृष्टि से देखते हैं या हिम्मत और अविश्वास की दृष्टि से? यदि पहली सूरत है तो निस्सन्देह हमारा मार्ग बिलकुल दूसरा हो जाता

है। समय का कोई एलान, भविष्य के लिये कोई वादा या विधान का कोई संरक्षण फिर हमारी आशंका और हमारे भय का वास्तविक इलाज नहीं हो सकता। हम मजबूर हो जाते हैं कि किसी तीसरी ताकत की मौजूदगी बरदाश्त करें। यह तीसरी ताक़त मौजूद है और अपनी जगह छोड़ने के लिए तैयार नहीं है और हमें भी यही ख्वाहिश रखनी चाहिये कि वह अपनी जगह न छोड़ सके। किन्तु यदि इसके खिलाफ हम यह महसूस करते हैं कि हमारे लिए भय और आशंका की कोई वजह नहीं, हमें हिम्मत और आत्म विश्वास की दृष्टि से भविष्य की ओर देखना चाहिये तो फिर हमारे कर्तव्य का मार्ग बिलकुल साफ हो जाता है। हम फिर अपने आपको बिलकुल दूसरी दुनिया में पाने लगते हैं, जहाँ अशंका, द्विविधा, अकर्मण्यता और प्रतीक्षा की परछाईं भी नहीं पड़ सकती। विश्वास दृढ़ता, कर्तव्य-पालन और सर-गरमी का सूरज जहाँ कभी नहीं डूब सकता; वक्त का कोई उलझाव, परिस्थिति का कोई उतार-चढ़ाव, मामलों की कोई चुभन हमारे कदमों का रुख नहीं बदल सकती। फिर हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हिन्दुस्तान के

राष्ट्रीय लक्ष्य के मार्ग में कदम उठाएँ आगे को बढ़े चलें।

मुझे इस सवाल का जवाब मालूम करने में जरा भी देर नहीं लगी। मेरे दिल के एक एक तार एक एक रेशे ने पहली हालत से इनकार किया। मेरे लिए असम्भव था कि इसकी कल्पना भी कर सकूँ। मैं किसी मुसलमान के लिये बशर्ते की उसने इस्लाम की रूह को उसकी आत्मा को अपने दिल के एक एक कोने से ढूँढ़ कर निकाल न फेंका हो, यह मुमकिन नहीं समझता कि वह अपने को पहली हालत में देखना बरदाश्त कर सके। मैंने सन् १९१२ में 'अल हिलाल' जारी किया और अपना यह फैसला मुसलमानों के आगे रखा। आपको यह याद दिलाने की आवश्यकता नहीं है कि मेरी आवाज़ खाली गई। सन् १९१२ से १९१६ तक का जमाना हिन्दुस्तान के मुसलमानों की नई राजनैतिक करवट का ज़माना था। सन् १९२० के आखीर में जब चार बरस की नजर-बन्दी के बाद मैं रिहा हुआ तो मैंने देखा कि मुसलमानों के राजनैतिक विचार अपना पिछला साँचा तोड़ चुके हैं और नया साँचा ढल रहा है।

इस घटना को अब बीस बरस गुजर चुके। इस अरसे में तरह तरह के उतार-चढ़ाव रहे। घटनाओं की नई नई बाढ़ें आईं। विचारों की नई नई लहरें उठीं। किन्तु एक हकीकत बिना किसी परिवर्तन के अब तक कायम है। मुसलमानों की आम राय पीछे लौटने के लिये तैयार नहीं हैं।

हाँ, वह अब पीछे लौटने के लिये तैयार नहीं है। लेकिन आगे बढ़ने के मार्ग के विषय में उसको फिर सन्देह हो रहा है। मैं इस समय इस परिस्थिति के कारणों पर बहस न करूँगा मैं केवल नतीजे देखने की कोशिश करूँगा। मैं अपने हम मजहबों को याद दिलाऊँगा कि सन् १९१२ में मैंने जिस जगह से उन्हें मुखातिब किया था, आज भी मैं उसी तरह खड़ा हूं। इस तमाम बीच के समय ने स्थितियों का जो ढेर हमारे सामने खड़ा कर दिया है उनमें कोई स्थिति ऐसी नहीं जो मेरे सामने से न गुजरी हो। मेरी आँखों ने देखने में और मेरे दिमाग़ ने सोचने में कभी कसर नहीं की। स्थितियाँ केवल मेरे सामने से गुजरी ही नहीं है मैं उनके अन्दर खड़ा रहा हूं और मैंने एक एक स्थिति को जाँचा और पड़ताला है। मैं मजबूर हूं कि मैं

अपनी आँखों से देखे हुए और अपनी अक़्ल से समझे हुए को न झुठलाऊँ।

मेरे लिए असम्भव है कि अपने विश्वास से लड़ सकूँ। मैं अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ को नहीं दबा सकता। मैं इस तमाम अरसे उनसे कहता रहा हूं और आज भी उनसे कहता हूं कि हिन्दुस्तान के नौ करोड़ मुसलमानों के लिये केवल एक ही कर्तव्यपथ हो सकता है जिसकी ओर मैंने उन्हें सन् १९१२ में दावत दी थी।

मेरे जिन हम मजहबों ने सन् १९१२ में मेरी बात को अपनाया था लेकिन आज जिन्हें मुझसे मतभेद है उन्हें मैं इसके लिए बुरा नहीं कहूंगा। किन्तु मैं उनसे अपील करूँगा कि वे इस प्रश्न पर निष्पक्ष होकर और गम्भीरता के साथ विचार करें, यह कौमों और मुल्कों की किश्मतों का मामला है। हम इसे समय की क्षणिक भावनाओं के बहाव में बह कर तय नहीं कर सकते। हमें जिन्दगी की ठोस हकीकतों की बिना पर अपने फैसलों की दीवारें तामीर करनी है। ऐसी दीवारें रोज बनाई और रोज ढाई नहीं जा सकती हैं। मैं स्वीकार करता हूं कि बद-किश्मती से वायु मण्डल इस

समय गर्द से भरा हुआ है। मगर उन्हें हकीकत की रोशनी में आना चाहिये। वह आज भी हर पहलू से मामले पर गौर करलें। वह इस नतीजे पर पहुँचेंगे कि कर्तव्य का उनके सामने कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

(६)

मैं मुसलमान हूं और गर्व के साथ अनुभव करता हूं कि मुसलमान हूं। इस्लाम की तेरह सौ बरस की शानदार रियासतें मेरी पैतृक सम्पत्ति है। मैं तैयार नहीं हूं कि इसका कोई छोटे से छोटा हिस्सा भी नष्ट होने दूँ। इस्लाम की तालीम, इस्लाम का इतिहास, इस्लाम के इल्म और फन और इस्लाम की तहजीब मेरी पूँजी है और मेरा फर्ज है कि उसकी रक्षा करूँ। मुसलमान होने की हैसियत से मैं अपने मजहबी और कलचर दायरे में आप अपना एक खास अस्तित्व रखता हूं और मैं बरदास्त नहीं कर सकता कि इसमें कोई हस्त-क्षेप करे। किन्तु इन तमाम भावनाओं के अलावा मेरे अन्दर एक और भावना भी है जिसे मेरी जिन्दगी की हकीकतों ने पैदा किया है। इस्लाम की आत्मा मुझे उससे नहीं रोकती, बल्कि मेरा

मार्ग प्रदर्शन करती है। मैं अभिमान के साथ अनुभव करता हूं कि मैं हिन्दुस्तानी हूं। मैं हिन्दुस्तान की अविभिन्न संयुक्त राष्ट्रीयता का एक अंश हूं। मैं इस संयुक्त राष्ट्रीयता का एक ऐसा महत्व-पूर्ण अंश हूं, उसका एक ऐसा टुकड़ा हूं जिसके बिना उसका महत्व अधूरा रहता है। मैं उसकी बनावट का एक जरूरी हिस्सा हूं। मैं अपने इस दावे से कभी दस्तबरदार नहीं हो सकता।

हिन्दुस्तान के लिये प्रकृति का यह फैसला हो चुका था कि इस सर-जमीन में मनुष्य की मुख्तलिफ नसलें, मुख्तलिफ सभ्यताओं और मुख्तलिफ धर्मों के काफले का सम्मेलन हो। अभी मानव इतिहास का प्रभाव भी नहीं हुआ था कि इन काफलों का यहाँ आना शुरू हो गया और फिर एक के बाद एक सिलसिला जारी रहा। हिन्दुस्तान की विशाल सर जमीन उसका स्वागत करती रही और इस उदार भूमि की गोद में सब को जगह मिली। इन्हीं काफलों में आखिरी काफला हम मुसलमानों का भी था। यह भी पिछले काफलों के पद चिह्नों पर चलता हुआ यहाँ पहुँचा और हमे । के लिये बस गया। यह दुनिया की दो अलग

अलग कौमों और तहज़ीबों की धाराओं का मिलन था। यह गंगा और यमुना की धाराओं की तरह पहले एक दूसरे से अलग अलग बहते रहे, फिर प्रकृति के अटल नियम के अनुसार दोनों को एक ही सङ्गम में मिल जाना पड़ा। इन दोनों का मेल इतिहास की एक जबरदस्त घटना थी। जिस दिन यह घटना हुई उसी दिन से प्रकृति के छिपे हुये हाथों ने पुराने हिन्दुस्तान की जगह एक नये हिन्दुस्तान के ढालने का काम शुरू कर दिया।

हम अपने साथ अपनी पूँजी लाये थे और यह सर-जमीन भी अपनी पूँजी से माला माल थी। हमने अपनी दौलत इसके हवाले कर दी और उसने अपने खजानों के दरवाजे हम पर खोल दिये। हमने उसे इस्लाम की पूँजी की सब से ज्यादा कीमती चीज़ें दे दी जिसकी उसे उस समय सब से ज्यादा जरूरत थी। हमने उसे जम्हूरियत और इनसानी मसावात यानी जनतन्त्र और मानव एकता का सन्देश पहुँचा दिया।

इतिहास की पूरी ११ सदियाँ इस घटना पर

बीत चुकी हैं। अब इस्लाम भी इस सर-जमीन पर वैसाही दावा रखता है। अगर हिन्दू धर्म कई हजार साल से इस सर-जमीन के वासिन्दों का धर्म रहा है तो इसलाम भी एक हज़ार वर्ष से इसके बाशिन्दों का मज़हब चला आता है। जिस तरह आज एक हिन्दू अभिमान के साथ कह सकता है कि हम हिन्दुस्तानी हैं और हिन्दू मजहब के मानने वाले हैं, ठीक उसी तरह हम भी अभिमान के साथ कह सकते हैं कि हम हिन्दुस्तानी हैं और इसलाम मजहब के मानने वाले हैं। मैं इस क्षेत्र को इससे भी ज़्यादा बढ़ाऊँगा। मसलन मैं एक हिन्दुस्तानी ईसाई का भी यह अधिकार स्वीकार करता हूं कि वह आज सर उठा कर कह सकता है कि मैं हिन्दुस्तानी हूं और हिन्दुस्तान के वाशिन्दों के एक मजहब यानी ईसाई मजहब का मानने वाला हूं।

हमारे ११ सदियों के मिले जुले इतिहास ने हमारी हिन्दुस्तानी जिन्दगी के एक एक कोने को अपने तामीरी सामानों यानी अपनी रचनात्मक सामग्री से भर दिया है। हमारी भाषायें, हमारी शायरी, हमारा साहित्य, हमारा सामाजिक जीवन,

हमारी रुचि, हमारे शौक, हमारे लिबास, हमारे रस्म रिवाज, हमारे दैनिक जीवन की बेशुमार हकीकतें आदि कोई कोना भी ऐसा नहीं है जिसपर संयुक्त जीवन की छाप न लग चुकी हो। हमारी बोलियाँ अलग अलग थीं। मगर अब एक ही जबान बोलने लगे। हमारे रस्म-रिवाज एक दूसरे से जुदा थे पर उन्होंने मिलजुल कर एक नया साँचा पैदा कर लिया। हमारा पुराना लिबास इतिहास के चित्रों में देखा जा सकता है पर अब हमारे बदन पर नहीं मिल सकता। यह तमाम मिली जुली पूँजी हमारी संयुक्त राष्ट्रीयता की एक दौलत है और हम इसे छोड़कर उस जमाने की तरफ लौटना नहीं चाहते जब हमारी यह मिली जुली जिन्दगी शुरू नहीं हुई थी। हममें यदि ऐसे हिन्दू मस्तिष्क मौजूद हैं जो चाहते हैं कि एक हजार साल पहले का हिन्दू जीवन वापस ले आयें तो उन्हें मालूम होना चाहिये कि वे एक स्वप्न देख रहे हैं जो कभी पूरा होने वाला नहीं है। इसी तरह अगर ऐसे मुसलमान दिमाग मौजूद हैं जो चाहते हैं कि अपनी उस बीती हुई तहजीब और सामाजिक जिन्दगी को फिर ताज़ा करें जो वह एक हजार

साल पहले ईरान और मध्य ऐशिया से लाये थे तो मैं उनसे भी कहूंगा कि इस स्वप्न से वह जितनी जल्दी जाग जांय बेहतर है, क्योंकि यह एक अप्राकृतिक कल्पना, एक गैर कुदरती तख-य्युल है और इस तरह के ख्यालात वास्तविकता की जमीन में नहीं उग सकते। मैं उन लोगों में हूं जिनका विश्वास है कि पुरानी चीजों को फिर से ताजा करने की ज़रूरत मज़हब के मैदान में है, लेकिन समाजी जिन्दगी में इस तरह का मतलब तरक्की से इनकार करना है। हमारे इस एक हज़ार साल के मिले जुले जीवन ने एक संयुक्त राष्ट्रीयता, एक मुत्तहिदा कौमियत का साँचा ढाल दिया है। इस तरह के साँचे बनाये नहीं जा सकते, वह प्रकृति के छिपे हुए हाथों से सदियों में खुद ब खुद बना करते हैं। अब सांचा ढल चुका और भाग्य की मुहर उस पर लग चुकी। हम पसन्द करें या न करें अब हम एक हिन्दुस्तानी कौम बन चुके हैं। पृथकता की कोई बनावटी कल्पना हमारे इस एक होने को दो नहीं बना सकती। हमें प्रकृति के फैसले पर रजामन्द होना चाहिये और भाग्य की तामीर में लग जाना चाहिये।"

आपके भाषण की उपर्युक्त पंक्तियों से आप के निस्वार्थ नीति पूर्ण सच्चे हृदय का पता लगता है। ईश्वर आपको दीर्घायु प्रदान कर हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक बनाये रखें।

॥ समाप्त ॥